SYNOPSIS

शोध–प्रारूप का शीर्षक

समकालीन इतिहास में कानुनी एवं सामाजिक सुधारों पर नारीवादी आंदोलन का प्रभाव : एक विश्लेषणत्मक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा–846004

के

स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग (सामाजिक विज्ञान संकाय)

में

पी–एच0डी0 शोध हेतु प्रस्तावित

शोध प्रारूप

2023

शोध पर्यवेक्षक

शोध प्रज्ञा

मोनी कुमारी
इतिहास विभाग,
ल0ना0मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

समकालीन इतिहास में कानुनी एवं सामाजिक सुधारों पर नारीवादी आंदोलन का प्रभाव : एक विश्लेषणत्मक अध्ययन

भूमिका :–

कमकालीन इतिहास में नारीवाद एक ऐसी विचारधारा है जो विश्व परिदृष्य में प्रभावी रूप से 19वीं सदी के उपरांत सामने आया है। इस विचारधारा में नारी को उनका स्थान, गरिमा, आत्मविश्वास एवं सभ्य मानवीय व्यवहार दिलाने के लिए प्रयासरत है। समाज में महिला के साथ होने वाले अत्याचार, दायम दर्जे की मानसिकता, विकृत सोच ने बदलती परिस्थितियों के साथ नारी का जीवन और पहचान अत्यधिक कठिन कर दी है। विश्व की आधी जनसंख्या इस समानता, पहचान रूपी संकट से गुजर रही है। नारीवाद एक आंदोलन, संघर्ष और विमर्श के रूप में यह प्रयास करता है कि नारी को भी समान मानव माना जाए और उनकी गरिमा, स्वतंत्रता, समानता उनके जैविक आधार पर न होकर उनके व्यक्ति रूप में होनी चाहिए। नारीवाद एक चिंतन के रूप में अनेको सिद्धांतों का अनुसरण करता है जो विकसित होती सामाजिक सोच एवं विचार से जुड़े है।

नारीवाद एक चिंतन के रूप में 1960 के दशक में शुरू हुआ, किंतु इसका आंदोलन और संघर्ष का इतिहास भिन्न–भिन्न चरणों में बंटा हुआ है जो सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप विकसित हुआ है। नारीवाद के विकास को तीन चरणों में बांटा गया है– प्रथम चरण (1972–1963)–यह प्रथम चरण के रूप में माना जाता है इस समय में अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, नीदरलैंड आदि देशों में महिला समानता का मुद्दा व्यक्तिगत रूप से उठाया गया। इस समय में मताधिकार, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक असमानताओं से मुक्ति आदि आंदोलन के मुख्य विषय थें।

द्वितीय चरण (1963–1980)–इस समय में पश्चिमी जगत, एशिया मध्य–पूर्व इन सब क्षेत्रों तक इसका प्रभाव देखा गया। इस चरण के नारीवादी आंदोलन में मुद्दों की श्रृंखला बहुत विस्तृत हो गयी जिसमें कानूनी असमानता, वास्तविक असमानता, व्यवसाय, सेना, मीडिया, खेल इत्यादि में समान अवसर और समान लाभ की माँग की जाने लगी। वैवाहिक कानून एवं तलाक कानून में परिवर्तन भी मुख्य विषय बन गये।

सिमोन द बुआ, केटमिलिट, बेट्टी फ्राइडमैन, जॉन स्टुअर्ट मिल आदि प्रमुख विद्वानों की पुस्तकों ने इस संघर्ष को बल दिया। तृतीय चरण (1980 से वर्तमान तक)–इस समय में यह आंदोलन रंग भेद की नीतियों और परंपराओं के विरूद्ध था। यह आंदोलन उत्तर–औपनिवेशिक और बाद की समाजवादी विश्व व्यवस्था में नारियों का संपत्ति के स्वामित्व के साथ उनके सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत सशक्तिकरण पर केंद्रित था।

विदेशों की ही तरह भारत में भी नारीवादी आंदोलन संगठित होकर एक समय में किया गया विद्रोह तथा आंदोलन नहीं रहा, बल्कि यहाँ भी क्रमिक विकास का प्रक्रिया मात्र रहा है, जिसमें धीरे–धीरे शिक्षा स्वतंत्रता और अधिकारों की माँग की गयी। भारत में नारीवाद को तीन चरणों में विभाजित किया जाता है–

प्रथम चरण (1850–1915)–प्रथम चरण में समाज में जागरूकता तथा महिलाओं को प्राकृतिक, जीवन तथा स्वतंत्रता का अधिकार दिलाना ही प्राथमिक कार्य था। समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वास और परंपराओं को ढाल बनाकर नारीयों के साथ किये जाने वाले अत्याचारों के खिलाफ सामाजिक जागरूकता आवश्यक थी। इसलिए राजा राम मोहन राय, डी0सी0कर्वे, सैय्यद अहमद खाँ, एम0जी0रानाडे, के0सी0सेन, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, ज्योतिराव फुले, दयानन्द सरस्वती जैसे विचारक और सामाजिक चिंतकों ने सामाजिक जागरूकता तथा कानूनी आधारों पर सुधार का प्रयास किया।

द्वितीय चरण (1915–1947)–भारत में नारीवादी आंदोलन का दूसरा चरण 1915 से माना जाता है। इस समय में गाँधी जी ने न सिर्फ समाज में नारी की भागीदारी बढ़ाई बल्कि नारी को स्वयं की शक्ति का अभास कराया।

तृतीय चरण (1947 से वर्तमान तक)–स्वतंत्र भारत में यह आंदोलन थोड़ा ठहर सा गया। नारीयों को कानूनी और संवैधानिक अधिकार प्रदान किये जाने के साथ ही उनमें समानता स्थापित हो गयी। किंतु 1970–71 में Towards Equality के साथ ही यह भ्रम समाप्त हो गया और राज्य स्तर पर नारियों की समानता के प्रयासों की महती आवश्यकता अनुभव की गई। 1970 से 80 का दशक भारत में इस जागरूकता का महत्वपूर्ण चरण बना। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में नारीयों के प्रति किये जा रहे अन्याय का गाँधीवादी तरीके से विरोध शुरू हुआ। सतीविरोधी, दहेज विरोधी, मूल्य विरोधी, शराब विरोधी विषय जिनका नारीयों के जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव था उन पर आंदोलन किये गए।

औचित्य :–

समकालीन इतिहास में नारीवादी आंदोलन महिला को अधिकारों एवं समानता का अवसर पाने में अहम भूमिका निभाया है। यह आंदोलन सिर्फ महिलाओं को गुजारे–भत्ते के लिए ही तैयार नहीं किया, बल्कि उन्हें अपने अंदर नारी चेतना को जगाने और सामाजिक अत्याचारों से मुक्ति पाने का माहौल भी तैयार करती है। वर्तमान समाज में कई महिलाएँ प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर एवं वकील आदि बच चुकी है लेकिन फिर भी बहुत सारी महिलाओं को आज भी सहयोग और सहायता की आवश्यकता है विशेषकर गाँव की महिलाओं को। उन्हें शिक्षा और आजादीपूर्वक कार्य करने, सुरक्षित कार्य और सामाजिक आजादी में अभी भी और सहयोग की आवश्यकता है। समाज में महिला के विकास के लिए महिलाओं के विरूद्ध बुरी प्रथाओं के कारणों को समझना होगा तथा उन्हें हटाना होगा जो समाज की पितृसत्तात्मक एवं पुरूष व्यवस्था से युक्त है। यह आवश्यक है कि समाज में महिला के विरूद्ध पितृसत्तात्मक एवं रूढ़िवादी विचारधाराओं को बदले तथा संवैधानिक एवं कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाए। जिससे नारी स्वयं भी और समाज में अन्य महिलाओं के जीवन में सभ्य, सुख एवं शांति का नींव डाल सके। इसतिहास में नारीवादी आंदोलन का प्रभाव कानूनी एवं समाजिक चिंतन तक ना होकर प्रयोगमूलक तथा व्यवहारिक है। नारीवादी आंदोलन महिला को अपने अधिकार साकार करने में समर्थ बनाता है। अतः नारीवादी आंदोलन का प्रभाव सामाजिक सुधारों एवं कानूनी पर विश्लेषण तथा अनुशीलन से समाज में नारी के प्रगति को नई दिशा प्राप्त होगी।

शोध का उद्देश्य :–

वर्तमान काल को उत्तर आधुनिक काल कहा जाता है। इस युग में भी नारी का स्थिति पूर्ण रूप से ठक नहीं है क्योंकि समाज में पूर्व से पितृसत्ता को एक ऐसा सामाजिक व्यवस्था बना दिया है जिसमें पिता या कोई पुरूष, जो परिवार के सभी सदस्यों, सम्पत्ति व अन्य आर्थिक साधनों पर नियंत्रण रखता है, वही मुखिया कहलाता है, क्योंकि वंश या खानदान पुरूषों के नाम से ही चलता है। समाज की इस पितृसत्ता प्रधान समाज व्यवस्था में पुरूष का स्थान नारी से ऊँचा माना जाता है। जिससे पूरा विश्व के नारी के सामने अराजकता व्याप्त है। नारी पितृसत्ता के कारण अशांत और तनाव ग्रस्त जीवन जीने के लिए विवश है। ऐसी परिस्थिति में नारीवादी आंदोलन विश्व की महिला को इस संकट से मुक्त करने में समर्थ है। नारीवादी आंदोलन राजनीतिक विचारधाराओं और सामाजिक

आंदोलन की एक श्रेणी है। इसमें राजनीतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत और सामाजिक लैंगिक समानता स्थापित करने के एक लक्ष्य को साझा करता है। इसमें महिलाओसं के लिए पुरूषों के समान शैक्षिक और पेशेवर अवसर की स्थापना होती है और नारीयों के जीवन को आलोकित करता है। अतः इस शोध का उद्देश्य नारीवादी आंदोलन के मूल रचना एवं समाज में व्यवहारिक प्रयोगों के आधार पर समग्र मूल्य को संसार के समक्ष उपस्थित करना है। इस शोध की सार्थकता भी इस प्रयास के सफल होने में ही है।

पूर्व कल्पना :–

नारीवादी आंदोलन का शुरूआत इस विश्वास के साथ होता है कि महिला पुरूष के तुलना में हीनता की स्थिति में है। नारीवादी विचारधारा मुख्य रूप से नर–नारी भेदभाव से जुड़ा है एवं यह महिलाओं के अधिकारों से संबंधित है। यह कल्पना महिलाओं की पराधीनता और उनके प्रति होने वाले अन्याय पर ध्यान केंद्रित करते हुए इनके प्रतिकार के उपायों पर विचार करती है। नारीवादियों के अनुसार सेक्स एक जीव वैज्ञानिक तथ्य है तथा जेंडर एक समाज वैज्ञानिक तथ्य है। नारीवादियों का मानना है कि प्रकृति ने महिला और पुरूष की शारीरिक बनावट में जो अंतर स्थापित किया है उसी को सामाजिक स्थिति का आधार बना लिया गया है जो कि तर्कसंगत नहीं है। ये मान्यताएँ सामाजिक जीवन में महिला के संपूर्ण जीवन पर पुरूष के नियंत्रण को बढ़ावा देती है जिससे पितृसत्ता स्थापित होती है और यह पितृसत्तात्मक व्यवस्था ही नारीयों का शोषण का कारण है इस प्रकार से नारीवादियों का मानना है महिलाओं की हीन स्थिति का कारण कृत्रिम है और यह समाज द्वारा निर्मित है जिसे चुनौती दी जानी चाहिए अतः समाज में पितृसत्ता के बर्चस्व के कारण नारीयों का जो शोषण होता है उसका निवारण नारीवादी आंदोलन से हो सकता है।

केन्द्र बिन्दु :–

नारीवादी आंदोलन के द्वारा समाज में अनेकों प्रकार के नैतिक मूल्यों के विचार प्रस्तुत किए गए है जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक भागीदारी को लेकर गंभीरतापूर्वक चिंतन किया एवं महिलाओं की असमानता, दमन और अधीनता के कारणों, प्रकारों और समाधानों के बारे में नारीवाद का अलग–अलग विचार है। मुख्य रूप से नारीवाद को तीन धाराओं में बाँटकर देखा जाता है–उदारवादी नारीवाद, अमूल परिवर्तन नारीवाद एवं समाजवादी नारीवाद अतः नारीवादी विचारधारा में विविधताएँ है। प्रस्तुत शोध नारीवादी आंदोलन में महिला का सामाजिक कानूनी जीवन पद्धति का अन्वेषण तथा

विश्लेषण है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य के केन्द्र में महिला को अधिकार प्राप्त करने के लिए नारीवादी आंदोलन को ही चिन्हित किया गया है। नारीवादी आंदोलन के कानूनी एवं समाजिक विश्लेषण के क्रम में विश्व के विभिन्न नारीवादी विचारों पर भी प्रकाश दिया जाएगा।

पूर्व अध्ययन :–

कानूनी एवं सामाजिक आंदोलन का नारीवादी आंदोलन पर इतिहास में अनेकों कार्य किए गए है विश्व स्तर के अनेकों ख्यातिलब्ध विद्वानों ने सामाजिक सुधारों पर नारीवादी आंदोलन का प्रभाव पर शोध कार्य के द्वारा ज्ञान में वृद्धि की है। इस शोध कार्य को करने से पूर्व अनेकों नारीवादियों विद्वान के पुस्तक का अध्ययन कर शोध कार्य किया जाएगा। अतः पूर्व अध्ययन के क्रम में मेरी वोलस्टान क्राफ्ट की विण्डीकेशन ऑफ द राइट ऑफ वुमैन, केटमिलेट की सेक्सुअल पॉलिटिक्स, आशारानी बोहरा की भारतीय नारी दशा और दिशा पुस्तक का तथा उसके लेखकों का उल्लेख किया जा सकता है।

शोध पद्धति :–

प्रस्तुत शोध प्रबंधन सामाजिक विज्ञान संकाय से संबंधित है। अतएव इस शोध कार्य में विश्लेषणात्मक पद्धति, तुलनात्मक पद्धति तथा समीक्षात्मक पद्धति के द्वारा अनवेषण करने की योजना है। नारीवादी आंदोलन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त कर तथ्यों का संकलन किया जाएगा तथा उन तथ्यों के संकलन के आधार पर ही विश्लेषण किया जाएगा।

कार्य योजना :–

प्रस्तुत शोध प्रबंध में छः अध्याय होगा। तात्पर्य यह है कि इस शोध प्रबंध को छः अध्यायों में विभक्त किया जायेगा जो इस प्रकार है :–

प्रथम अध्याय :–	भूमिका
दूसरा अध्याय :–	नारीवादी आंदोलन का केन्द्रबिंदु
तीसरा अध्याय :–	नारीवादी आंदोलन का ऐतिहासिक आधार
चौथा अध्याय :–	भारत में नारीवादी आंदोलन का आधार
पाँचवा अध्याय :–	नारीवादी आंदोलन का कानूनी एवं सामाजिक महत्व
छठा अध्याय :–	नारीदवादी आंदोलन का समीक्षा

संदर्भ ग्रंथों की सूची :–

1. नारीवादी राजनीति : संघर्ष एवं मुद्दे, साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता, हिन्दी माध्यात कार्यान्वयन निदेशालय।
2. नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार–शुभ्रा परमार, ओरियंट ब्लैक स्वॉन।
3. कमला भसीन, पितृसत्ता क्या है, Kali For Women
4. भारत में स्त्री असमानता, गोपा जोशी, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय
5. जैन सिमी, इन्साइक्लोपीडिआ ऑफ इंडियन वीमेन थ्रु ऐसेज
6. मेरी वोल्स्टान क्राफ्ट – विण्डीकेशन ऑफ द राइट ऑफ वुमैन
7. सीमोन द बुआ – द सेकेण्ड सेक्स
8. केट मिलेट – सेक्सुअल पॉलिटिक्स
9. जॉन स्टुअर्ट मिल – सब्जेक्शन ऑफ वुमैन
10. श्रीवास्तव, सुधीर कुमार महिला सशक्तिकरण में महिलाओं की भूमिका
11. आशारानी बोहरा – भारतीय नारी दशा और दिशा।

उपरोक्त पुस्तक के अतिरिक्त विभन्न शोध पत्रिकाओं, समाचार पत्र, अन्य पुस्तकों को भी शोध कार्य के दौरान सम्मिलित किया जाएगा।

शोध पर्यवेक्षक **शोध प्रज्ञा**

मोनी कुमारी
इतिहास विभाग,
ल0ना0मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा